# मेरे हनीमून की यादें

“गर्लफ्रेंड से शादी करके हम हनीमून पर मनाली निकल गए। हम शादी से पहले सैंकड़ों बार सम्भोग कर चुके थे तो हनीमून पर कुछ नया करने का सोचा। तो हमने क्या नया किया ? ...”

**Story By: (veersingh.rasiya)**
**Posted: Sunday, March 31st, 2019**
**Categories: इंडियन बीवी की चुदाई**
**Online version: मेरे हनीमून की यादें**


*Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire*

# मेरे हनीमून की यादें

आप सभी पढ़ने वालों और वालियों को मेरा नमस्कार। मेरी पिछली कहानियों पर मुझे काफी मेल्स मिले। कुछ ने नंबर पाने की भी चेष्टा की। माफ़ी चाहूंगा क्यूंकि मैं खुद दुनिया के सामने नहीं आना चाहता। आप बस मेरी कहानियों को पढ़ें और आनंद लें और अपना प्यार बनाये रखें।

एक लम्बे अंतराल के बाद कहानी लिख रहा हूं क्यूंकि पिछले कुछ महीनों से काफी व्यस्त था।
शोभा से मेरी शादी हो गयी है और हम दोनों अपने प्यार को एक दूरी चरण में ले आये है।

जो लोग शोभा के बारे में नहीं जानते उनसे निवेदन है कि मेरी पुरानी कहानियां पढ़ ले।
पिचकारी… दे मारी
पिचकारी घुसी पिछवाड़े में

बिना कोई वक़्त गंवाए मैं अपनी नयी कहानी पर आता हूँ। आज जो किस्सा आपको बता रहा हूँ वो हमारे हनीमून का है।

मैंने और शोभा ने हनीमून किसी ठंडी जगह मनाने का मन बनाया। और हम शादी के सात दिन बाद अपने हनीमून पर मनाली निकल गए। ज़ाहिर है हनीमून की बात है तो सारी तैयारियां हम लोगो ने पहले से कर रखी थी। शोभा ने दो बार चॉकलेट वैक्स भी करवा लिया था। हमने शान्ति और प्राइवेसी के लिए मनाली से थोड़ा बाहर एकांत में बंगलो लिया तीन दिन के लिए।

जब हम वह पहुंचे तो बहुत शानदार नज़ारा था। सामने बर्फ से ढके पहाड़ ; बंगलो के

सामने हरी हरी घास ; दूर दूर तक कोई शोर नहीं सिर्फ प्राकृतिक आवाज़ें। दो बंगलो के बीच काफी दूरी और ऊंची दीवारें थी, मतलब कोई तंग नहीं करने वाला। खाने के लिए सिर्फ एक कॉल करो और आधे घंटे में खाना डिलीवर!

शोभा वहां पहुँच कर जैसे गुम सी गयी थी। वो खुशी से मेरे गले लगी। हम लोग पहले नहाये और फिर खाना आर्डर कर दिया। शोभा ने सेक्सी नाईटी पहन ली थी। अंदर जी-स्ट्रिंग पहन रखी थी। पारदर्शी होने के कारण सारे नज़ारे साफ़ दिखाई दे रहे थे। उसके गोरे और गोल नितम्ब छोटी सी नाईटी से बाहर आ रहे थे।

हम दोनों ने शादी से पहले ही एक दूसरे से ना जाने कितनी बार सम्भोग कर लिया था। हनीमून पर कुछ नया करेंगे ऐसा संकल्प लेकर आये थे। थोड़ी देर में खाना आ गया और मैंने शोभा को बोला- गेट खोलो और खाना ले लो।
शोभा ने पहले तो थोड़ी ना नुकुर की क्योंकि उसने लगभग ना के बराबर कपड़े पहने थे। पर कुछ नया और रोमांचक करने के लिए उसने खड़े हो कर दरवाज़ा खोला। डिलीवरी वाला लड़का पहले तो स्तब्ध रह गया फिर अंदर बंगलो के हॉल में आकर टेबल पर खाना और बर्तन रख दिए।
वो जान बूझ कर बोला- सर, खाना सर्व कर दूँ?
मैंने कहाँ- हाँ।

और वो चोर नज़रों से शोभा को देखते हुए खाना सर्व करके चला गया। उसके जाते ही शोभा की योनि में मैंने जी-स्ट्रिंग के ऊपर से ही उंगली फेरी। उसकी पूरी योनि गीली हो गयी थी। पराये मर्द के सामने खुद को ऐसे पेश करने से वो बहुत ज्यादा उत्तेजित हो गयी थी।

शोभा ने नज़रें झुकाई और मैंने उसके बोबे दबा दिए। वो बहुत ज्यादा उत्तेजित थी और मैं भी। हमने खाना खाने से पहले ही सेक्स का दौर शुरू कर दिया। एक तो ठण्ड, फिर अभी

अभी जो हमने किया और हनीमून का अनूठा अहसास। आज की चुदाई का अहसास बिलकुल अलग था। आज शोभा की योनि चाटते हुए एक अलग ही मजा था। शोभा ने भी पूरा मुँह खोल खोल कर मेरा लिंग मुँह में गले तक उतारा।

आधे घंटे की इस ताबड़ तोड़ चुदाई के बाद हमने खाना खाया और बाहर गार्डन में पसर गए।

खुला आसमान, नंगे जिस्म, बर्फ से ढके पहाड़, हमें लग ही नहीं रहा था की हम अपने ही देश में हैं। ठण्ड से हमारे रोंगटे खड़े हो रखे थे पर फिर भी हमें मजा आ रहा था। शायद हम गरम प्रदेश वालों को सर्दी का अहसास बहुत सुखी लग रहा था।

हम लोग ठंडी हवा का आनंद ले रहे थे कि तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी। मैंने किराये पर कार की बुकिंग कर ली थी उसी का फ़ोन था और वो बता रहा था कि 10 मिनट में गाड़ी पहुंच जायेगी। मैं और शोभा तैयार होने चले गए।

गाड़ी वाला टाइम पर आ गया और चाबी देकर चला गया। हम अपनी प्राइवेसी में किसी भी प्रकार का दखल नहीं चाहते थे, ड्राइवर का भी नहीं। इसलिए गाड़ी किराये पर बुक करा ली थी।

मैंने शोभा को आवाज़ दी और शोभा एक ओवरकोट पहने जो घुटनों से थोड़ा ऊपर खत्म हो रहा था वो पहन कर बाहर आ गयी। मैं थोड़ा गुस्से में बोला की शोभा हमें इस ट्रिप को यादगार बनाना था और तुम ये पूरा ढक कर आ गयी। तभी शोभा ने ओवरकोट की आधी चैन खोली और उसके बोबे मुझे दिख गए। मतलब वो ओवरकोट के नीचे पूरी नंगी थी। उसने झट्ट से चैन फिर से बंद कर ली और गाड़ी में बैठ गयी।

मैंने शोभा से कहा- तुमने तो कमाल ही कर दिया ; बहुत सेक्सी हो तुम !

और अपनी गाड़ी मॉल रोड की तरफ बढ़ा दी। दो-तीन जगह पूछते हुए हम मॉल रोड पहुँच गए, गाड़ी पार्क करके मैं और शोभा पैदल घूमने लगे। हम दोनों एक-दूसरे को देख कर मुस्कुरा रहे थे। लोगों की इतनी भीड़ में शोभा अंदर से पूरी नंगी घूम रही थी ; हम दोनों बहुत उत्तेजित थे।

अँधेरा होने वाला था तो हमने वापस बंगलो पर चलने का प्लान बनाया और गाड़ी में आ कर बैठ गए।

मैं गाड़ी चला रहा था और शोभा मुझे चिढ़ाने के लिए बार बार चैन नीचे करके अपने बोबे के दर्शन करवा रही थी। मेरा लिंग खड़ा हो गया और जीन्स में दर्द करने लगा। थोड़ी देर में हम शहर से थोड़ा बाहर आये तो मैंने अपने लिंग बाहर निकाल दिया। मेरा खड़ा लिंग देख कर शोभा उसकी मुठ मारने लगी। शोभा ने अपने ओवरकोट की चैन पूरी खोल दी और वो आगे से पूरी नंगी होकर मेरा लिंग चूसने लगी।

मुझसे गाड़ी नहीं चलायी जा रही थी। मैंने सोचा एक्सीडेंट ना हो जाए इसलिए रोड के साइड में गाड़ी रोक दी। पूरा अँधेरा, एक तरफ खायी और एक तरफ थोड़ा जंगल जैसा। मैंने गाड़ी की लाइट बंद करके शोभा को धक्का दिया और उसकी सीट को पीछे की और धकेल दिया। मैं उसकी योनि के अंदर जीभ घुसाने लगा। वो मेरे सर को पकड़ कर और योनि में घुसने लगी। फिर मैंने उसे पलटाया और उसकी गांड चाटने लगा। चॉकलेट वैक्स से उसकी पूरी बॉडी मखमल से हो गयी थी। पीछे से मैंने अपना लिंग शोभा की योनि में धकेल दिया।

तभी अचानक एक गाड़ी सामने से आयी और हमारी गाड़ी पर उसकी रोशनी पड़ी। गाड़ी थोड़ी दूर जा कर रुकी और वापस पीछे आयी। हम लोग कुछ समझते इस से पहले एक आदमी हमारी गाड़ी के शीशे पर नॉक करने लगा।

शोभा जल्दी से पलटते हुए चैन बंद करने लगी और मैंने भी अपना लिंग अंदर खिसकाया और शीशा नीचे करके पूछा- क्या प्रॉब्लम है ?
कोई 30 साल का आदमी रहा होगा, शोभा की तरफ देखते हुए वो बोला- जंगल में मंगल मुझे भी करने दो।
मैंने उसे गुस्से में बोला- अपनी बकवास बंद करो !
और गाड़ी स्टार्ट करने लगा।

उसने मेरी गाड़ी की चाबी निकाल ली और बोला- भाई, मैं गलत आदमी नहीं हूँ। मुझ पर विश्वास कर सकते हो। मैं तो सिर्फ विनती कर रहा था, नहीं करना तो कोई बात नहीं और उसने गाड़ी की चाभी वापस से मुझे पकड़ा दी और अपना कार्ड देकर वो खुद अपनी गाड़ी की तरफ चल पड़ा।

मैं और शोभा झट से वहां से निकल कर अपने बंगलो पर आ गए और चैन की सांस ली।

जब सब कुछ नार्मल हुआ तो हम फिर से एक दूसरे में खो गए। शोभा ने दो-तीन बार उस आदमी का जिक्र किया कि वो चाहता तो कुछ भी कर लेता, कितना अच्छा आदमी था।
मैंने कहा- तो बुला लेते हैं उसे कल सुबह नाश्ते पर ?
शोभा की ख़ामोशी मैं समझ गया था।

चुदाई के दौर के बाद जब शोभा नींद की आगोश में थी तब मैंने उस आदमी को मेसेज कर दिया कि कल सुबह नाश्ते पर मिलते हैं और अपना एड्रेस भेज दिया।

कल के दिन का सोचते सोचते कब आँख लग गयी पता ही नहीं चला।

सुबह हमारी नींद 9 बजे दरवाज़े की घंटी से खुली। मैंने अनमने मन से उठ कर दरवाज़े की ओर बढ़ा। शोभा बिस्तर में कल रात की चुदाई के बाद से नंगी सो रही थी। बैडरूम का

दरवाज़ा बंद कर के मैंने बाहर का दरवाज़ा खोला।
वो ही आदमी बाहर खड़ा था।
मुझे देख कर बोला- बहुत नींद में दिख रहे हो ? मुझे नाश्ते पर बुला कर सो ही रहे हो।

मैंने उसे अंदर आने के लिए कहा और बंगलो के पीछे बने गार्डन में कुर्सी पर बिठाया। चाय के लिए आर्डर किया और उस आदमी से उसके बारे में पूछा। उसने अपना नाम जॉन बताया और बताया की वो दिल्ली से सोलो ट्रिप पर आया है।
मैंने उसे अपना नाम बताया और कल रात को हुयी घटना के बारे में पूछने लगा।

जॉन ने बताया- जब मैं उस मोड़ पर मुड़ा तब एक पल के लिए मेरी गाड़ी की रोशनी आपकी गाड़ी के कांच पर पड़ी और मुझे आपके हिलने से समझ आ गया था कि चुदाई चल रही है। मैं आपके पास आपके खेल को ख़राब करने नहीं आया था। बस अपनी तक़दीर की परीक्षा लेने आया था और सोचा था कि शायद आप लोग मान जायें !
“हम दोनों की नयी नयी शादी हुयी है और हनीमून पर आये हैं। हम लोग ज्यादा उत्तेजित हो गए थे इसलिए वहीं पर शुरू हो गए। जानता था की ये जोखिम भरा है पर उत्तेजना में कुछ समझ और होश नहीं रहता। मैंने उसे समझाया।
“उसी होश ना रहने की वजह से मुझे लगा कि आप लोग उत्तेजना में मुझे भी शामिल कर लोगे।” और जॉन और मैं हंसने लगे।

तभी शोभा भी गार्डन में आ गयी। नींद में थी, बाल खुले हुए और छोटी निकर और ब्रा पहन कर बाहर आ गयी थी।
जैसे ही जॉन को देखा तो वो वापस अंदर जाने के लिए भागी। थोड़ी देर बाद वो एक सभ्य ड्रेस पहन कर बाहर आ गयी।

चाय भी आ चुकी थी। मैंने चाय सबको दी और शोभा का जॉन से परिचय करवाया।

शोभा टेढ़ी नज़रों से मुझे देख रही थी जैसे कह रही थी कि रात की बात को इतनी गंभीरता से क्यों ले लिया और इसे यहाँ क्यों बुला लिया।

मैंने माहौल को हल्का करने के लिए जॉन के सामने ही बोला- कल गाड़ी में जॉन ने सब देख लिया था फिर भी कोई जोर जबरदस्ती नहीं की।
शोभा ने उसे शुक्रिया कहा और बोली- आजकल आप जैसे लोग कम ही मिलते हैं।
“आप बहुत खूबसूरत हैं शोभा! वीर जी की तो ज़िन्दगी रंगीन कर दी आपने!” जॉन ने वो पैंतरा आजमाया जिससे हर लड़की शरमा जाती है।
“धन्यवाद!” बस इतना ही निकला शोभा के मुँह से।
उसका लाल चेहरा बता रहा था कि वो कितना आनंद में थी।

तभी जॉन बोला- चाय से ठंडी नहीं जायेगी, कोई रम पीने की इच्छा रखता है?
मैं और शोभा कभी कभी रम पीते थे तो मैंने हाँ कर दी। जॉन ने गाड़ी की चाबी उठायी और कहा- तो मैं लेकर आता हूँ।

उसके जाते ही शोभा मुझसे बोली- क्या जरूरत थी उसे हाँ करने की? हम हनीमून पर आये हैं, हमें अभी बहुत सी जगह घूमना है।
मैंने शोभा को समझाया- घूमने के लिए सारी ज़िन्दगी पड़ी है, ये जवानी बस कुछ पल की है तो आओ इसे भरपूर सुख दिया जाए।
शोभा ने कहा- मैंने इस बारे में सोचा नहीं था कि मैं किसी और के साथ …
मैंने कहा- शोभा डार्लिंग, कुछ मत सोचो, सिर्फ जियो। हम सिर्फ मस्ती करने आये हैं, मस्ती करनी है। और कुछ मत सोचो। कुछ हुआ तो भी अच्छा … नहीं हुआ तो भी अच्छा। हम अपनी तरफ से कुछ नहीं सोचते। हाँ, तुम्हें जब भी जो भी गलत लगे तो बस एक इशारा कर देना, बाकी सब बंद हो जायेगा। मेरा वादा है तुमसे। मेरे लिए सिर्फ तुम्हारी खुशी मायने रखती है।

शोभा ने मुझे गले लगा लिया।
मैंने कहा- चलो नहा लेते हैं, फिर आराम से बैठते हैं।

वक़्त बचाने के लिए शोभा बैडरूम वाले बाथरूम में नहाने चली गयी और मैं बाहर बने बाथरूम में नहाया।

बाहर आकर मैंने टॉवल बाँधा ही था कि दरवाज़े पर घंटी बजी। जॉन आ गया था, बोला- भाई मैं सब सामान ले आया और तुम लोग अभी तक तैयार नहीं हुए ?
मैंने उसे बोला- मैं रेडी हूँ, और शोभा भी आने वाली है।

हमने हॉल में बैठने की व्यवस्था की क्यूंकि बाहर गार्डन में सर्दी ज्यादा लगती।
जॉन और मैंने अपने अपने पेग बनाये और चियर्स किया ही था कि शोभा भी आ गयी।
“वाह जी वाह … मुझे भूल गए आप दोनों ? मेरा गिलास कहाँ है ?” शोभा सोफे पर पड़ी कम्बल को पैर पर ओढ़ते हुए बोली।

शोभा ने वन पीस पहना था, गीले, खुले बाल में वो कयामत लग रही थी।
मैं और जॉन उसे देखते ही रह गए।

जॉन ने शोभा के लिए भी एक पेग बनाया और उसे गिलास हाथ में पकड़ाते हुए कहा- कल जबसे आपको देखा है आपको मैं कभी नहीं भूल सकता।
हम तीनों ने हंसते हुए चियर्स किया और पेग खींचने लगे।

बातों का दौर चल रहा था और साथ में टीवी पर गाने चला रखे थे। दो पेग के बाद में रम की वजह से गर्मी लगने लगी तो शोभा ने अपने पैर से कम्बल हटा दिया। अब उसकी नंगी जांघें मेरे और जॉन के सामने थी। जॉन की आँखों में हवस भर गयी थी और मेरी आँखों में भी। शोभा भी मस्ती में थी।

मैंने बोतल उठाने के बहाने उसके बोबे को अपनी कुहनी से छुआ। तब अहसास हुआ कि शोभा ने अंदर ब्रा नहीं पहनी है। और मेरे हाथ लगाने से उसके निप्पल खड़े हो गए थे। जिसकी बनावट बाहर से दिखने लगी।

तीसरा पेग जॉन ने शोभा के निप्पल को देखते हुए एक घूँट में पी डाला। उसके बाद जॉन उठ कर बाथरूम चला गया।

“और कितना तड़पाओगी अपने दीवाने को ? देखो वो मुठ मारने गया तुम्हारे नाम की !” मैंने शोभा के बोबे दबाते हुए कहा।
“हा हा हा … मैंने नहीं कहा उसे वो सब करने को। मेरे पास आ जाता तो क्या मैं मना करती ?” रम के नशे के कारण शोभा थोड़ा ज़ोर से बोली।

मैं शोभा के नमकीन होंठों को चूसने लगा। मेरा मुँह बाथरूम की तरफ था और शोभा की पीठ उस तरफ। जॉन कब बाथरूम से निकला शोभा देख नहीं पायी। वो होंठ चुसवाने में खोयी हुयी थी। जॉन ने मुझे देखा जैसे विनती कर रहा हो कि क्या मैं भी आ जाऊँ।

मैंने उसे आँखों से सहमति दी तो उसने बाथरूम में ही अपने सारे कपड़े उतार दिए। उसका लिंग पूरी तरह से तना हुआ था और रंग में गोरा था।
वो पीछे से आया और सीधा शोभा के बोबे पर हाथ रख कर दबाने लगा।

शोभा के होंठ मेरे होंठ से जुड़े हुए थे। पहले तो वो एकदम सकपकायी पर फिर संभल गयी और ज़ोर से मेरे होंठ चूमने लगी। शायद उसे भी मजा आने लगा था और उसने अपने मूक सहमति दे दी।

जॉन ने शोभा की ड्रेस में नीचे से हाथ घुसाया और ऊपर की तरफ उठा दिया ड्रेस। अंदर से शोभा बिलकुल नंगी थी, पैंटी भी नहीं पहनी थी।

अब सिर्फ मैं कपड़ों में बचा था। जैसे ही मैं अपने कपड़े उतारने के लिए खड़ा हुआ, जॉन शोभा पलट कर उसके होंठ चूसने लगा। यह देख कर मेरा लिंग उत्तेजना से फटने लगा। शोभा की गांड मेरी तरफ थी और वो जॉन की बांहों में थी।
मैं उत्तेजना में शोभा की गांड पर जीभ फेरने लगा।

अब शोभा एक हाथ जॉन के गले में डाली हुए थी और एक हाथ से मुझे अपनी गांड के छेद की तरफ धकेल रही थी। मैंने दोनों हाथों से उसके नितम्ब फैलाये और उसके गांड के छेद में अपनी जीभ सरका दी।
क्या अद्भुत अनुभूति थी।

थोड़ी देर गांड चाटने के बाद में खड़ा हुआ तो जॉन भी आगे की तरफ आ गया। शोभा सोफे से नीचे की तरफ उतर कर घुटने के बल बैठ कर बारी बारी से हम दोनों के लंड को चूसने लगी। कभी बॉल्स चाटती कभी लंड।
ऐसा लग रहा था कि मैं किसी पोर्न फिल्म का किरदार हो गया हूँ। शोभा अपनी जीभ का बहुत अच्छा इस्तेमाल कर रही थी।

जब मुझसे रहा नहीं गया तब मैंने शोभा को उठा कर सोफे पर पटका और उसकी चूत चाटने लगा। जॉन ने अपना लंड शोभा के मुँह में डाल दिया। जॉन थोड़ी देर में शोभा के मुँह में ही झड़ गया और पराये मर्द के पानी को पूरा गटकने के बाद शोभा भी पानी छोड़ने लगी।

दोनों थोड़ा शांत हुए तो शोभा ने मेरे लंड को हाथ में लेकर हिलाया। तभी एकदम से जॉन नीचे झुक कर मेरा लंड चूसने लगा।
पहले तो मुझे बहुत अजीब सा लगा। पर मैं अपने चरम पर था, कुछ ही मिनट में मेरा पानी निकल गया और जॉन उसे पूरी तरह से चूस कर पी गया।

हम तीनों ने फिर से अपने पेग बनाये और चियर्स किया।
तब जॉन ने बताया कि वो बाईसेक्सुअल है। मतलब उसे चूत मारना भी पसंद है और गाँड मरवाना और लंड चूसना भी।

पेग खत्म होते होते जॉन फिर से शोभा के निप्पल्स दबाने लगा।
शोभा ने कहा- बैडरूम में चलते है।

हम तीनों बैडरूम में पहुंचे और शोभा पर कुत्तों के जैसे टूट पड़े। मैंने शोभा की चूत में लंड टिकाया तो शोभा ने कहा- पहले जॉन का लंड डलवाओ।
मैंने कहा- फिर मेरा क्या होगा?
जॉन बोला- मैं शोभा की चूत ठंडी करता हूँ, और आप मेरी गांड मार लो।

जॉन ने अपनी गांड चिकनी कर रखी थी। मैंने सोचा कि चलो ये भी अनुभव कर लेते हैं। और वैसे भी अपने को तो मस्ती करनी है।

जॉन ने शोभा की चूत में लंड पेला और मैंने जॉन की गांड में लंड घुसाया। अब मेरे धक्के से जॉन हिल रहा था और उसकी वजह से शोभा की चूत में जॉन का लंड अंदर बाहर हो रहा था। जॉन की गांड पकड़ कर मैं ज़ोर से पेलने लगा।

थोड़ी देर बाद शोभा बोली- मेरी गांड में भी खुजली हो रही है।
तो हमने अपनी जगह बदली। जॉन नीचे लेटा और शोभा उसकी तरफ मुँह करके उसके लंड पर बैठ गयी। शोभा की गांड मेरी तरफ थी तो मैंने अपने लंड उसकी गांड में डाल दिया। दोनों तरफ के हमले से शोभा दर्द और आनंद के मारे चीख पड़ी।

बाद में हम तीनों लगभग एक साथ झड़ गए। बहुत मजा आया।
शोभा से पूछा तो उसने भी कहा- ये हनीमून तो यादगार हो गया। इसे जीवन में कभी नहीं

भूल सकती.
और मेरे गले लग गयी। जॉन भी आकर हमारे गले लग गया।

उसके बाद हमने एक राउंड और लगाया और सो गए।

सुबह जॉन को दिल्ली निकलना था, फिर मिलने का वादा करके वो निकल गया।

उसके जाने के बाद बीती रात की चुदाई को याद करके एक बार और चुदाई करी।

दिन में थोड़ा घूमने के बाद अगले दिन हम भी अपने घर को निकल पड़े एक अनूठा अनुभव को दिल में समेट कर!

दोस्तो, आप कमैंट्स और मेल करके अपने सुझाव भेजते रहिये। नयी कहानी और अनुभव के साथ जल्दी ही मिलेंगे।
आपका अपना
वीर सिंह रसिया
veersingh.rasiya@gmail.com

# Other stories you may be interested in

## जिम में भाभी से दोस्ती के बाद चुदाई

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम प्रवीण शर्मा है. मेरी उम्र 25 वर्ष और मेरी लंबाई 5 फुट 11 इंच है. मैं मध्यप्रदेश के जबलपुर का रहने वाला हूँ. मैं जिम जाने का शौक रखता हूं, इसलिए मेरी बॉडी फिट है. अन्तर्वासना […]
Full Story >>>

## प्यासी बंगालन की सहेली की हवस पूर्ति

नमस्कार दोस्तो, आप सभी ने अन्तर्वासना पर प्रकाशित मेरी पहली कहानी प्यासी बंगालन की चूत चुदाई को पढ़ा. मेरी कहानी मेरी ज़िंदगी का सच्चा अनुभव था जो कि मैंने आप सभी से शेयर किया। बहुत से मित्रों ने मुझे मेल […]
Full Story >>>

## सालों से प्यासी बीवी की चोदाई

मेरे प्यारे पाठकों को मेरा प्यार भरा नमन, मैं प्रधान जी अपनी एक और अनुभव ले कर आपके सामने प्रस्तुत हूँ, मेरे नए पाठको से अनुरोध है कि आप मेरी पिछली कहानियों को जरूर पढ़ें ताकि मेरे इस कहानी के […]
Full Story >>>

## अन्तर्वासना से बना दोस्त मेरे घर आ पहुंचा

नमस्ते दोस्तो, मैं बैडमैन, याद तो होऊंगा ही, बिलकिस बानो जो हमारे साथ थी उसकी आईडी ब्लॉक हो गयी है उसके लिए कहानी मैं भेज रहा हूँ. आनंद लीजिए। सलाम वालेकुम दोस्तो, मैं बिलकिस बानो, आपको तो याद ही होऊँगी, […]
Full Story >>>

## पड़ोस की भाभी की गर्म चूत में मेरा लंड-2

मेरी सेक्स कहानी के पहले भाग पड़ोस की भाभी की गर्म चूत में मेरा लंड-1 में आपने पढ़ा कि कैसे मैंने अपने पड़ोस की एक भाभी को पहले कपड़े बदलते अधनंगी देखा, फिर उसे किसी गैर मर्द से चुदाई करवाते […]
Full Story >>>